महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ग्वालियर

प्रतिवेदन माह जुलाई 2025

हिन्दी विभाग दिनांक 31 - 07-2025

तुलसीदास और प्रेमचंद जयंती

भारतीय साहित्य के पुरोधा है तुलसीदास और प्रेमचंद

दिनांक 31 जुलाई 2025 को एम.एल.बी. महाविद्यालय, ग्वालियर के हिन्दी विभाग द्वारा गोस्वामी तुलसीदास एवं मुंशी प्रेमचंद जयंती के अवसर पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग की अध्यक्ष एवं अकादमिक सचिव डॉ०अर्चना अग्रवाल द्वारा की गई। इस अवसर पर मॉ सरस्वती के पूजन के पश्चात दोनों महान हिंदी रचनाकारों को उनके जन्म दिवस पर स्मरण करते हुए उनके हिंदी साहित्य में अवदान पर चर्चा की। परिचर्चा का आरंभ हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ.आर.के.सिंह के वक्तव्य के साथ हुआ। डॉ०सिंह ने गोस्वामी तुलसीदास के समग्र व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए रामचरितमानस जैसे कालजयी ग्रंथ को आधुनिक भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक बताया तथा मानव कल्याण में उसकी महती भूमिका को रेखांकित किया। तुलसीदास बहुत बड़े युगदृष्टा थे।भारतीय ज्ञान परम्परा में तुलसीदास जैसा रचनाकार भारतवर्ष में अवतरित हुआ, यह भारत की उपलब्धि है। परिचर्चा में तुलसीदास की भक्ति के स्वरूप व लोकमंगल की अवधारणा को डॉ.श्रृद्धा सक्सेना ने विस्तार सहित स्पष्ट किया। डॉ.ममता गोयल एवं डॉ.पुष्पलता सिंह ठाकुर ने तुलसीदास की भक्ति में विनम्रता और अपने इष्ट के प्रति समर्पण की पराकाष्ठा को रेखांकित किया। परिचर्चा में डॉ.वी.के. अग्रवाल ने मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं उनके विशाल रचना संसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद ऐसे अकेले कथाकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में अपने कालखंड की प्रत्येक समस्या को अपने लेखन की विषय वस्तु बनाया। उन्होंने उन सभी समस्याओं को उठाने का प्रयास किया जो अन्य रचनाकारों की दृष्टि से ओझल रहीं। इसीलिए उन्हें उपन्यास सम्राट कहा गया है। विशिष्ट वक्ता डॉ०नीरज झा (प्राध्यापक राजनीति शास्त्र) ने प्रेमचंद की जनवादी विचारधारा पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ.पदमा शर्मा व डॉ.साधना दीक्षित ने परिचर्चा में भाग लेते हुए प्रेमचंद की सूक्ष्म रचना दृष्टि पर अपने-अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद के समतुल्य कथाकार आज तक हिंदी में दूसरा कोई नहीं हो पाया। अध्यक्षीय उद्वोधन में डॉ०अर्चना अग्रवाल ने अंग्रेजी के लेखक टॉमस हार्डी से तुलना करते हुए प्रेमचंद के लेखन की चर्चा की और कहा कि रामचरितमानस जैसा लोक कल्याणकारी महाकाव्य आज तक किसी भाषा में नहीं रचा गया। परिचर्चा में एम ए के विद्यार्थी अनूप कुमार जाटव एवं राजकुमार माझी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ.सीमा शर्मा ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ.सीमा पाठक द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में छात्र/छात्रायें उपस्थित थे।

विभागाध्यक्ष हिन्दी

दिनांक 1-8-2025